B.A I (Hindi)
I Paper भारतीय दर्शन [illegible]

सांख्य दर्शन- सत्कार्यवाद

कारण-कार्य का सिद्धान्त [illegible] दार्शनिकों के लिए एक [illegible] विषय रहा है जहाँ [illegible] सिद्धान्त की व्याख्या [illegible] करते हैं वहीं भारतीय दार्शनिक [illegible] व्याख्या [illegible] है। सांख्य के कारण कार्य सिद्धान्त सत्कार्यवाद के नाम से [illegible] जाता है। सत्कार्यवाद का [illegible] है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में [illegible] मौजूद रहता है। सांख्य दर्शन [illegible] सत्कार्यवाद का सिद्धान्त [illegible] का केन्द्र बिन्दु है

सांख्य दर्शन का यह [illegible] कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में विद्यमान रहता है। यह उसका [illegible] है लेकिन जो लोग [illegible] रूप में देते हैं उनके [illegible] वाद या आरम्भवाद की [illegible] इनके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में वर्तमान नहीं रहता है मुख्य रूप से इसके [illegible] को माना गया है तो इस लिए [illegible] वाद और सत्कार्यवाद दोनों दो [illegible]

सिद्धान्त के रूप में ग्रहण करते हैं। असत्कार्य वाद के समर्थन में लोगों का कहना है कि यदि कार्य अपने कारण में पहले से अन्तर्निहित होगा तो यह उत्पन्न-मुक्त होगा। जैसे घड़ा और मिट्टी को एक ही उदाहरण स्वरूप लेते हैं यदि घड़ा कार्य है और मिट्टी कारण है तो घड़ा को मिट्टी में पहले से ही मौजूद रहना चाहिए और ऐसा रहने पर हमें कुम्हार की जरूरत नहीं पड़ती

सांख्य दर्शन असत्कार्य वाद के सिद्धान्त का घोर विरोध करता है सत्कार्यवाद के दो रूप होते हैं परिणामवाद तथा विवर्तवाद। परिणाम वाद उसे कहा जाता है जिसके अनुसार कार्य कारण का वास्तविक रूपान्तर है तथा विवर्त वाद उसे कहा जाता है जिसके अनुसार कार्य कारण का अवास्तविक रूपान्तरण है। विवर्तवाद के सिद्धान्त को शंकर वेदान्त दर्शन में भी अपनाया गया है उदाहरण स्वरूप रस्सी और साँप को ले सकते हैं अंधेरी रात में हम कभी रस्सी को साँप समझ बैठते हैं रस्सी में साँप का आभास मात्र है परन्तु वास्तविक नहीं।

सत्कार्यवाद में यह बतलाया गया है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में मौजूद है यदि इसे सही नहीं माना जाये तो उपादान कारण चुनने में कठिनाई का